अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना

* लखन लाल बोहने, सहायक प्राध्यापक, (शिक्षा विभाग) भिलाई मैत्री कॉलेज, भिलाई, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़ (भारत)
Email id - lakhan.bohane8@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इसके लिए न्यादर्श के रूप में कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् छःसौ विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। इसमें सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों से तीन सौ तीन सौ विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अध्ययन संबंधी अधिगम शैली मापन हेतु स्वनिर्मित तथा हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु डॉ. सुषमा शर्मा एवं डॉ. सुनिता छाबरा द्वारा निर्मित हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। शोधपत्र में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु दो चरिता विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की अधिगम शैली का उनकी हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

मुख्य शब्द : अधिगम शैली, लिंग–छात्र–छात्रा, हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति।

प्रस्तावना :

अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक विद्यार्थी में पाठ्यवस्तु को ग्रहण करने की अलग–अलग शैली होती है। जैसे–देखकर, सुनकर, पढ़कर, लिखकर एवं क्रिया करके। प्रत्येक बालक की एक विशिष्ट शैली होती है जिसे वह प्रयोग कर उत्तम अधिगम करता है। बालक जब किसी कार्य को स्वयं करके देखता है तो वह उस कार्य को जल्दी सीख लेता है। जिससे बालक के मन में कार्य

के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होने लगता है। यही जिज्ञासा बालक को गहन अध्ययन की ओर प्रेरित करता है।

अधिगम शैली एवं हिन्दी भाषा के प्रति अभिवृत्तियों पर अनुसंधान किया जाना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भाषा ज्ञान के प्रति अत्यधिक सचेत रहने की आवश्यकता है। दस वर्ष की उम्र के पश्चात् का विद्यार्थी विज्ञान, कला, वाणिज्य एवं सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों का स्तरीय अध्ययन प्रारंभ करता है। इन विषयों को ठीक–ठीक ढंग से समझने एवं अध्ययन के लिए हिन्दी माध्यम भाषा के श्रेष्ठ एवं शुद्ध स्तर की आवश्यकता है। हिन्दी भाषा के प्रति अभिरूचि एवं अभिवृत्तियों के सकारात्मक विकास से ही इन विषयों के रहस्यमयी द्वार खुलते है और बालक हिन्दी भाषा को एक अस्त्र बनाकर इन विषयों के अध्ययन में भी निपुन हो जाता है। अन्यथा भाषा की अशुद्धियॉ विविध विषयों की अध्ययन में भ्रम पैदा करके उन विषयों के प्रति उत्पन्न होने वाली अभिरूचियों को भी समाप्त कर सकता हैं क्योंकि यही वह स्तर है जहा बालक विविध विषयों की पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली से परिचित होता है और हिन्दी भाषा के नये–नये शब्द संसार से भी परिचित होता है। हिन्दी भाषा के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया पर आधारित दस्तावेजों जैसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) 2005 में पृष्ठ क्रमांक 41,42 एवं 43 में हिन्दी भाषा के प्रति अभिवृत्ति पर विस्तृत उल्लेख किया गया है। उसी प्रकार भाषा शिक्षा से संबंधित विस्तृत विवरण पृष्ठ क्रमांक 41,43,46 एवं 47 में वर्णित है। भारतीय संविधान में शिक्षा को समवर्ती सूची में रखा गया है, अर्थात् शिक्षा पर केन्द्र तथा राज्य दोनों के द्वारा कानून बनाये जा सकते है। भारतीय संविधान में शिक्षा के लोकव्यापीकरण हेतु अनेक प्रावधान किये गये है। इस दिशा में शिक्षा का अधिकार 2009 एक मील का पत्थर साबित हुआ है संविधान के 86 वे संशोधन अधिनियम 2002 द्वारा 21(क) जोड़ा गया जो यह प्रावधान करता है कि राज्य कानून बनाकर 6 से 14 वर्ष के सभी बालकों के लिए निःशुल्क शिक्षा अनिवार्य के लिए लागू करेगा। इस अधिकार को व्यावहारिक रूप देने के लिए संसद में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 पारित किया जो 1 अप्रेल 2010 से लागू हुआ। इस अधिनियम में 7

अध्याय एवं 38 खण्ड है। इस अधिनियम के अंतर्गत 6–14 वर्ष के लगभग 22 करोड़ बालकों में से 92 लाख (4.6) प्रतिशत बच्चे विद्यालय नहीं जाते थे जिनकी शिक्षा के लिए 1.71 लाख करोड़ रूपये की 5 वर्षो में आवश्यकता होगी। जिसमें से 25 करोड़ रूपये वित्त आयोग राज्यों को देगा। **जोशी और शर्मा (2013)** ने "माध्यमिक स्तर पर वाणिज्य स्ट्रीम छात्रों के शिक्षण माध्यम के संदर्भ में हिन्दी भाषा के प्रति रूचि" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि अंग्रेजी माध्यम के छात्रों को हिन्दी माध्यम के छात्रों की अपेक्षा हिन्दी भाषा में कम रूचि थी जबकि वाणिज्य विषय के हिन्दी माध्यम छात्रों में अंग्रेजी भाषा का ज्ञान सामान्य से अधिक पाया गया जिससे उनमें दोनों भाषा के प्रति पसंद सकारात्मक पायी गयी।

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में बालक अपनी अधिगम शैली को स्पष्ट रूप से पहचान नही पाता है जिसके कारण उसे लक्ष्य को प्राप्त करने में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और वह उस क्षेत्र में पिछड़ जाता है अगर बालक अपनी सीखने की शैली को पहचान ले तो उस क्षेत्र में उसे निश्चित सफलता मिलेगी। इन्ही समस्याओं को ध्यान में रखते हुए **"अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन"** को शोध विषय के रूप में चयनित किया गया।

प्रकार्यात्मक परिभाषा

अधिगम शैली :

अधिगम शैली सीखने की वह विधि है जिसके द्वारा विद्यार्थी पाठ्य–वस्तु को अपनी रूचि के अनुसार, बिना किसी बाधा के आसानी से ग्रहण कर लेता है उसकी अधिगम शैली कहलाती है।

लिंग :

लिंग से अभिप्राय सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं से है।

हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति :

किसी विचार, वस्तु प्रणाली या घटना के प्रति जैसी अभिववृत्तियॉ होगी व्यक्ति उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करेगा। अभिवृत्ति के ज्ञान की सहायता से व्यक्ति के व्यवहार का पूर्व आकलन व विश्लेषण करना संभव होता है।

उद्देश्य :

अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना

चर :

स्वतंत्र चर – अधिगम शैली, लिंग–छात्र एवं छात्रा

आश्रित चर – हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति

परिकल्पना :

अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

विधि :

शोध समस्या की प्रकृति को देखते हुये शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :

न्यादर्श हेतु सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की सूची में से तकरीबन सात माध्यमिक विद्यालयों का चयन चिट (यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि) द्वारा किया गया। इस तरह से इन सात माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों के समूह पर प्रस्तुत

शोध क्रियान्वित किया गया। उसी प्रकार गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की सूची में से सात माध्यमिक विद्यालयों का चयन चिट (यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि) द्वारा किया गया और इन सात विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों के समूह पर प्रस्तुत शोध क्रियान्वित किया गया। इस प्रकार 14 सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों से 600 विद्यार्थियों का चयन चिट (यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि) द्वारा किया गया।

तालिका क्रमांक 1 : न्यादर्श का योजनाबद्ध विवरण

कक्षा	सरकारी विद्यालय			गैर सरकारी विद्यालय			कुल
	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग	कुल योग
आठवीं	150	150	**300**	150	150	**300**	**600**

शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अधिगम शैली मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित अधिगम शैली अनुसूची का प्रयोग तथा हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु डॉ. सुषमा शर्मा एवं डॉ. सुनिता छाबरा (2015) द्वारा निर्मित हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का एकत्रीकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रदत्तो का संकलन शोधकर्ता द्वारा सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर अलग–अलग दिनों में किया गया।

शोधकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन के लिये सर्वप्रथम विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से अपने शोध में प्रयुक्त उपकरणों को उनके माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों पर प्रशासित करने की अनुमति मांगी। तत्पश्चात् सम्बन्धित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं से मिलकर उनसे सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये और उनसे परिचय प्राप्त करने के बाद शोधकर्ता ने स्वयं का परिचय देते हुए एवं उनके विद्यालय में आने का अपना उद्देश्य बताया जिसके पश्चात् उपस्थित शिक्षकों ने सहर्ष सहयोग देने की बात कही।

शोधकर्ता द्वारा कक्षा आठवीं के चयनित प्रत्येक विद्यार्थियों को अधिगम शैली एवं हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति मापनी की एक–एक प्रति प्रदान की गई। तत्पश्चात् शोधार्थी द्वारा दोनों उपकरणों में अनुक्रिया देने की विधि को सविस्तार वर्णन करके समझाया गया।

प्रथम सरकारी विद्यालयों के कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से संपर्क किया गया। चयनित विद्यार्थियों को अधिगम शैली अनुसूची की एक–एक प्रति प्रदान की गयी। तत्पश्चात् इस अनुसूची में अनुक्रिया दर्ज करने की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया। उन्हे बताया गया कि आपको सीखने की शैली से संबंधित एक प्रपत्र दिया जा रहा है जिसमें दृश्य, श्रव्य एवं स्पर्शनीय अधिगम शैली से संबंधित कुल 45 कथन दिये गये है। सबसे पहले तुम्हे इस प्रपत्र में अपना नाम, उम्र, कक्षा व लिंग भरना है, फिर प्रत्येक कथन को ध्यान से पढ़ना है प्रत्येक कथन एक या अन्य प्रकार की अधिगम शैली को व्यक्त करता हैं, अतः आप अपने संबंध में जैसा महसूस करते हैं उसी के अनुसार कथन के सामने बने पॉच विकल्पों, जो कि क्रमशः **सदैव** (Always), **प्रायः** (Often), **कभी–कभी** (Sometimes), **शायद कभी** (Rarely) **तथा कभी नहीं** (Never) वाले प्रत्युतरों को इंगित करते हैं, में से किसी एक खाने में सही (√) का चिन्ह लगा दें। इसी प्रकार, सभी कथनों का उत्तर देवें एवं कोई भी कथन न छोड़ें। इसमें सही/गलत कुछ नहीं हैं, इसलिए निःसंकोच अपनी राय या पसंद व्यक्त करें। आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेंगे। कुछ कथनों में आपको ऐसे शब्द नहीं मिलेगे जैसे आप चाहते हो, फिर भी प्रत्येक कथनों में से जो आपको सबसे ठीक लगे उन्हे सही का चिन्ह लगाना है, अगर आपको किसी शब्द का अर्थ मालूम नहीं है तो आप तुरंत पूछ सकते हो एक ही कथन पर ज्यादा समय नहीं लेना है। उन्हे बताया गया है कि इस प्रपत्र की कोई समय सीमा नहीं है फिर भी आप इन्हे जल्द से जल्द भरे। विद्यार्थियो द्वारा प्रपत्र भरे जाने के बाद उन्हे एकत्र करके जमा किया गया। इसी तरह सभी सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अधिगम शैली का मापन किया गया।

प्रदत्तों का संकलन से संबंधित दूसरा प्रपत्र हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति है। इसके मापन हेतु शर्मा एवं छाबरा (2015) द्वारा निर्मित हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति मापनी का एक एक प्रति चयनित विद्यार्थियों को दिया गया और उन्हे बताया गया कि इस मापनी में कुल 56 कथन दिये गये हैं जिनके तीन विकल्प सहमत, अनिश्चित एवं असहमत हैं। प्रपत्र में जो भी कथन दिये गये है उनके विकल्पों पर अपने मतानुसार सही (√) का चिन्ह लगाना है। विद्यार्थियों को सम्पूर्ण निर्देश देकर एवं उनका विश्वास अर्जित कर निष्पक्ष उत्तर देने हेतु प्रोत्साहित किया गया तथा विद्यालय के प्राचार्य से अनुरोध किया गया कि वे परीक्षण के प्रशासन के अवसर पर उपस्थित न रहे, जिससे प्रमाणिकता बढ़ाई जा सके। इस तरह से विद्यार्थियों के द्वारा दिये गये उत्तरों के आधार पर उनके हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ली गई।

इसी विधि द्वारा सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित प्रदत्त संकलित कर शोधार्थी ने प्रदत्त एकत्रिकरण की प्रक्रिया को पूर्ण किया।

सांख्यिकीय अभिप्रयोग :

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य से संबंधित संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये दो चरिता विश्लेषण (2x2 Factorial Design ANOVA) सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

'अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन' करना था। इस उद्देश्य से संबंधित संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये दो चरिता विश्लेषण (2x2 Factorial Design ANOVA) सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया है, इस विश्लेषण के परिणाम तालिका क्रमांक 2 में दिये गये है।

Table No. 2: Summary of 2x2 Factorial Design ANOVA for Attitude towards Hindi

Source of Variance	Sum of Squares	df	Mean sum of Squares	F	Sig.
Learning Styles	577.766	1	577.766	3.842	.050
Gender	1437.207	1	1437.207	9.557	.002**
Learning Styles x Gender	312.282	1	312.282	2.077	.150
Error	89628.657	596	150.384		
Total	9687458.000	600			

** = 0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक 2 से यह स्पष्ट होता है, कि हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति के लिये F-Value का मान 3.842, df = 1/596 है, जो 0.05 पर सार्थक नहीं है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों की अधिगम शैली का उनकी हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः यह शून्य परिकल्पना कि 'अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।' को स्वीकृत किया जाता है।

इस विवेचना के आधार पर यह कह सकते है कि विद्यार्थियों की अधिगम शैली का उनकी हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

तालिका क्रमांक 2 से यह स्पष्ट होता है, कि हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति के लिये F-Value का मान 9.557, df = 1/596 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों की लिंग का उनकी हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया जाता है। अतः यह शून्य परिकल्पना कि 'अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।' को अस्वीकृत किया जाता है।

इस विवेचना के आधार पर कह सकते है कि विद्यार्थियों की लिंग का उनकी हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

तालिका क्रमांक 2 से यह स्पष्ट होता है, कि हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति के लिये F-Value का मान 2.077, df = 1/596 है, जो 0.05 पर सार्थक नहीं है। इसका अर्थ है कि अधिगम शैली एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति

पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः यह शून्य परिकल्पना कि 'अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।' को स्वीकृत किया जाता है।

इस विवेचना के आधार पर कह सकते है कि अधिगम शैली एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :

विद्यार्थियों की अधिगम शैली का उनकी हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया जबकि लिंग का हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया। परंतु अधिगम शैली एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

विवेचना :

वर्तमान समय में शिक्षक द्वारा अधिगम के दौरान दृश्य, श्रव्य एवं स्पर्शनीय सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है जिससे विद्यार्थियों को विषयवस्तु को समझने में आसानी होती है क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षक द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के तहत विभिन्न दृश्य, श्रव्य एवं स्पर्शनीय सहायक सामग्रीयों का प्रयोग कक्षा शिक्षण के लिए किया जा रहा है। शोध निष्कर्ष में विद्यार्थियों की अधिगम शैली का हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि छत्तीसगढ़ी मातृभाषी बालक जब पाठशाला जाता है तो उसकी माध्यम भाषा हिन्दी हो जाती है। इसी के साथ ही उसकी सम्पर्क भाषा छत्तीसगढ़ी बनी रहती है क्योंकि वह छत्तीसगढ़ी में पलता–बढ़ता, खेलता–कूदता बड़ा होता है। इसीलिए माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी में उसे कठिनाई होती है। यही कारण है कि विश्व के अधिकतर शिक्षाविद और मनोभाषा वैज्ञानिक मानते है कि बालक को स्कूल की शिक्षा मातृभाषा में ही अनिवार्य रूप से देनी चाहिए। एक तरफ अंग्रेजी के प्रभाव एवं आकर्षण के कारण हिन्दी के प्रति उसकी अभिवृत्ति कम होती जा रही है।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिगम शैली का प्रभाव विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है क्योंकि बालक जब श्रव्य अधिगम शैली से सीखता है तो उन्हे भाषा की आवश्यकता होती है वे मातृभाषा एवं सम्पर्क भाषा का सहारा लेकर अधिगम को पूर्ण करता है उसी प्रकार दृश्य अधिगम के दौरान भी उसे भाषा की आवश्यकता होती है मातृभाषा से ही वह विभिन्न दृश्यों को जैसे मॉडल, चार्ट, शिक्षक का हाव भाव, मुख मुद्राएँ आदि को देखते हुए समझता है तथा स्पर्शीय अधिगम के दौरान भी भाषा की आवश्यकता पड़ती है जैसे शिक्षक द्वारा छात्रों के प्रतिक्रिया पर पीढ़ थपथपाना जिसका सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। मॉडल को स्पर्श कर समझना, कार्य करके सीखना एवं परियोजना द्वारा आदि। शोध के परिणामों से पता चलता है कि जो बालक अपने अधिगम शैली को पहचान कर बिना किसी बाधा के किसी भी विषयवस्तु को आसानी से सीख लेता है या उसे ग्रहण कर लेता है तो उसकी उत्तम अधिगम शैली कहलाती है। इस प्रकार बालक के उत्तरोत्तर विकास के लिये मातृभाषा का ज्ञान होना अति आवश्यक है तथा उत्तम अधिगम शैली के लिए भाषा का ज्ञान होना अति आवश्यक है क्योंकि कोई भी मनुष्य या विद्यार्थी इन तीन शैलियों से ही ज्यादातर सीखने में रूची लेते है और अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को जानने के लिये इन्ही शैलियों का सहारा लेते है जो है देखना, सुनना एवं स्पर्श करना। मनुष्य या विद्यार्थियों के जीवन में सीखने के लिए इन्ही तीन शैलियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रत्येक शिक्षक की भी स्वयं की अधिगम शैली होना चाहिए तभी वह विद्यार्थियों के अधिगम शैली को पहचान कर उनमें उत्तम सीखने की शैली तथा उन्हे सही दिशा प्रदान कर सकता है और उनके भावी जीवन में उन्हे अध्ययन के लिए प्रेरित कर सकता है। प्रस्तुत शोध का शैक्षिक निहितार्थ इसी में निहित है।

संदर्भित ग्रंथ–सूची

- **चेरमाहिनि, एस. ए. एण्ड अदर्स (2013)** लर्निंग स्टाइल्स एण्ड एकेडमिक परफारमेंस आफ स्टूडेण्ट्स इन इंग्लिश एज् ए सेकण्ड लेंग्वेज क्लास इन इरान. बोलगारियन जरनल आफ सांइस एण्ड एजुकेशन पोलिसी,वोल्युम 7(2), 322–333

- **जोशी, एस. एण्ड शर्मा, ए. (2013)** ए स्टडी आफ द इंटरेस्ट टूवर्ड हिन्दी लेंगवेज विथ रिफरेंस टु टिचिंग मीडियम आफ कामर्स स्ट्रीम स्टूडेन्ट्स एट सीनियर सेकेन्डरी लेवल, एजुकेशन कॉनफेब, वोल्युम 2(11), 38–42

- **पाण्डेय, राम शकल (2010)** शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ. 147–160

- **सिंह, ए. के. (2013)** शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन प्रकाशक, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, 292–304

- **श्रीवास्तव, डी. एन. एवं वर्मा, पी. (2011)** मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 412–435

- **सीखने–सिखाने की प्रक्रिया,** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005), पृसं. 41–45, 1(10),143–152